



१॥ महागणेशाय नमः ॥ ॥ नमः श्रीमहालक्ष्मीदेवी ॥ श्रीदेव्या वाच ॥ श्रीसुक्ती श्रीम
होलक्ष्मा तताष्टक कथं प्रणम्य ॥ या एते वै त्वत्पुत्री मङ्गलं पुना कन कनी कर्वी ॥ १ ॥ श्रीमिव उ
वाच ॥ क्व वने एतया सिर्गित्वा तत्पुत्रा वात्सल्यमिच्छति ॥ प्रोक्तं देवाधिपत्यं उरुना धिपतंगरी ॥
२ ॥ भूत्यमैव स्य ददमिच्छाधिक्यं दत्ताय ॥ कथं नूतु वृदायार्गं महालक्ष्मीवदवता ॥ ३ ॥
श्रीदेवी नवमकीर्त्या गङ्गीका नदी लकी गथा ॥ धनद्विप्रका मर्थ विनिष्ठा गङ्गुकी किं
ग ॥ ४ ॥ महालक्ष्मी महा माया महा लक्ष्म लक्ष्मीता ॥ मङ्गलपुत्रा मङ्गलसंल्लाम कानामैव
दुषीक्षी ॥ ५ ॥ माहनी माहदुपाव माहना सुधन गथा ॥ मकारपञ्चम आर मार्वदुय
वनप्रदा ॥ ६ ॥ मूककेशा मारुदाव मोनी मातव गङ्गनी मर्कटी मर्कटा स्याव मणिमर्क
टलपिता ॥ ७ ॥ महीषघ्नी माहिषीव महीषा मीसासनी गथा मयनासी मयलाका महा

कैशी महादनी ॥८॥ महावीर्या महाबाणी, महासखा मरुचनी, मूकाहान मूठा
नीच, मरुनीयव्यराहिका ॥९॥ मयूनाहनी मधुस्काव, मकनन्द विलपना, मात
र्द्धिमान्यदूपाव, मधुकेटहरीजिका ॥१०॥ मधुवता मधुनता, मनसातंगसमिनी,
मध्यास्त्रा मधुगममर्द्या, मूर्तलोकध्वनीतथा ॥११॥ मूधुमाली मूधुहस्ता, मूधुमूधु
नपद्युता, मीठीधनो जमेनाका, मूधनी मूसलात्मिका ॥१२॥ मिथुना मेथुनन
ता, मेथुना रुधिरायाता, मधुमनी मीनवक्ता, मृकत्वनामिनीतथा ॥१३॥ मादनी
मरुनयव, मारुद्यु मरुलक्ष्म, मन्मथ मन्मथनता, मुनिप्रकाश मूनिवता ॥१४॥
मूहद्युता मूहटी, मूगनी मून्मयीतथा, मधवायन मधुस्का, मधुदूपा मनी
वा ॥१५॥ मूडादूपा मूडिकाव, मध्यापूत्रकचकुगा, मनाकहगिनीवैव, मरुदूपा म

समस्तु धर्म लक्षण नाश स य ४॥ ५॥ अस्वमेध दिग्गजानि रुर्लया प्रा निपा ० ४८
 (अप्य) कुरु महाद वि प्रकाशान्मृत्पु मायु यात ॥ ६॥ ०० मिथी सहजानन्द संहिता
 तल्ले श्री महालक्ष्मी द्वादशनाम स्तोत्रं समाप्तं ॥ ७॥ नमः श्री महालक्ष्मी देव्यै
 ४॥ ॥ मिर्वर्वाच ॥ महाश्रीस्वरूपी महाशानवर्क्री महादिव्यरूपी महासुष्ठु
 माली महावदुर्मौली महापाण्डुहस्ता महामोहहर्त्रि भक्तमाशिरुद्रपी ॥ ९॥ अपु
 द्वापि अवाव्या अनादिपद्मणी ॥ १०॥ विद्यासूनेनी महावीरसयी वा असंख्यभूषा
 ना महादेवदेवी नमस्तस्यादि सकीमिवास्था र्कगमनी ॥ ११॥ अद्वि विनामी सुव
 र्द्धिर्षकाक्षी महा कौलिकी महादेवनामा ॥ १२॥ गुह्यनाथरूपी गुह्यमिति तमे र्द्धि
 नमस्तु नमस्तु सदा हरवानी ॥ १३॥ सदेवादि व द्यामृकै उ वरा सी महासिंह

सौख्यपद्मणी कृताश्री महासंयमी श्री महासंजवासी महा पूर्वलक्ष्मी नमस्तु नमस्तु ॥ १४॥ सश्रीका
 नमो श्री महाकांतनामा ॥ १५॥ महासंक्रुहलास्वर्यजातिरूपी महाजकिनीपी महानाकसेनी नम
 स्तु नमस्तु महासूयमूर्ति ॥ १६॥ महासुवनमूर्ति महागुह्यगुह्या निनगा विनयपी गुरुद्वी
 ॥ १७॥ कृताश्री महाश्री महादेवपूजा तर्जुनी सदा लक्ष्मी महा पूर्वलक्ष्मी ॥ १८॥ महाविष्णु
 रूपी अरुपा विष्णुरूपी मधुपी देवपी एवानी तवपी ॥ १९॥ अथैव प्रसूति महासकिनरूपी नम
 स्तु नमस्तु सदा सीरवानी ॥ २०॥ महाभक्तिनेत्रा महासाहसानी सहाहं सहासा सहस्री सु
 तुल्यी महानन्दरूपी किमिदीपनावी सदा हरि कृमामहा पूर्वलक्ष्मी ॥ २१॥ ०० तत्पुनर्म
 गुह्यं तर्जुनी वल्लवसूरी नदयं गस्य कस्यापि (अप्य) कुरु सदा तथ ॥ २२॥ अथमेध
 दिग्गजानि कैनादानादिकादिनी गीमदितीर्थजागृता ॥ २३॥ नल एतदुली ॥ २४॥ महा

वक्रवर्दिनायी, महाइश्वर (५१ गथ) ॥ महातीर्थसूत्र (गह दवालय गुण गृह) ॥ ११ ॥
 वक्रवर्कसमानच, चतुष्पाथसूत्रालय ॥ मेधमद्वयमकचप (०००) उ विचक्रने ॥
 १२ ॥ ॐ तिष्ठति वक्रजामलमहातनुं श्रीमहालक्ष्मीं देव्या त्रेकमुपयातमूर्त्तं ससुदाम
 ॥ ॥ ॐ नमः श्रीमहालक्ष्मीं देव्या ॥ श्रीमहाइश्वर उवाच ॥ हिमाद्रिना जगदालिनीं
 हंसविष्णुपूजकां, विभक्तकवर्धकां, नमामि हृदयकां ॥ १ ॥ मृगद्वयगामिनि,
 सचर्मपद्मनिधीं, एवाह्वित्वोता निधीं ॥ २ ॥ कलसचार्द्धवीगर्गसचकचकम
 धर्मा, पूनातुपुष्पपट्टिनीं, विसालशार्ङ्गकमिनीं ॥ ३ ॥ ननास्थिहानकिंकिनीं, नृ
 मूढपाण्डुनिधीं, निष्ठुरहृत्नासिनीं, नमामि देव्यमर्दिनीं ॥ ४ ॥ सर्पचपतवा
 हिनीं, मकानर्पचरुनीं, मनुष्यमूढमालिनीं, सदापूनातुहेनवीं ॥ ५ ॥ अहिस

गङ्गासुहिनीं, महीषपूष्पालिनीं, कमानुकाटिमूढां, नमामि नक्रगामिनीं ॥ ६ ॥
 सुपक्रवस्तुसाजिनीं, सुनसमानदायिनीं, सुपन्नतुल्यवर्गिनीं, नमामि सुलहकि
 नीं ॥ ७ ॥ मेकाननीचवीजिनीं, महाशिकटावाहिनीं, नतासुदावीलासिनीं, नमा
 मिकोलकोलिनीं ॥ ८ ॥ महालक्ष्मीमहादेव्या, साञ्चपशुमर्नेधुयात्युडयित्वावा
 धनाद्यां गायतनव ॥ ९ ॥ सर्वरुद्रमवाप्राप्ति, सत्यसत्यममादितीं, महापूजां
 तिकस्तुति, प० ग० पूजा मर्ने ॥ १० ॥ सर्वसिद्धिस्वर्गोत्पत्तो मादतम कि मधुलव
 क्रनाग किमूकनचिकामणीनिवापनीं ॥ ११ ॥ हलैवर्कनेसकामि, वर्षकादि सगे
 नपी, नदयपन्नमिश्रयथा, दियीमिश्रयथवच ॥ १२ ॥ महारकायदातव्य, देवी
 रकीनतायव, कोलायवृद्धियूकाय, सत्यसत्यमममनि ॥ १३ ॥ ॐ तिष्ठति महा

[illegible]

श्रीगुरुदेव

सुखि नृपो महानोदी लिखी सहाननू पिटी ॥ गुह्यमतीगं गुह्यनृपी गुह्यमीगु
ह्यमागनी ॥ २१ ॥ गुह्यकाननू पिटी लिखी गुह्यमकीपना समनत ॥ षड्भुक्तिल
यवि वषणमायययनयनी ॥ २२ ॥ सहयमल लिखी सुखा मेहाल श्रीन मा
म्यह ॥ लश्रीपाठसमय स्त्री लेन वानीदगेहिनी ॥ २३ ॥ देवदर्य हनीदवी
देवपूशानिमा म्यह ॥ उमनू लिखी लहसौच नवजादिम सुधेनिटी ॥ २४ ॥
वाध्यादिका सुस्तच नमस्तु नमान म ॥ विदु लिखी धमय द्वाटी गजप
त तावही ॥ २५ ॥ धाठमक दसैयूकी गुह्यदानसु (धम) लिखी ॥ नमस्तु हिग
तादवी महल श्रीन मा म्यह ॥ २६ ॥ श्रीति नृपी लहसौच नमस्तु नमान
म ॥ धृत्यत श्रुनमी दिव्य सुवनाही मताहनी ॥ २७ ॥ यपटी लिखी सुधैति

तस्य पूर्यरुर्लंछ्यु चंद्रायण सहस्रस्य कन्यादानम तस्य च ॥ २८ ॥ अथ
 मेधमर्गपूर्य महाभागवदलहता ॥ नदयं वनदयं च नदयं च पून ४ पून ४ ॥
 यनदानगयष्टाया इहसं गतवधनि ॥ २९ ॥ निंदकार्यन दातव्यं नास्तिकाय च
 कोपिन ॥ ३० ॥ देवतकाय भिव्या ययुहृत्किनगाय च ॥ क्लानमीलाय धीना
 य दद्यात्कार्यं महं व नि ॥ ३१ ॥ मूर्च्छाचधनयद्वि साक्रान्तमाधमातव
 त् ॥ ३२ ॥ एतपनीयं एतपनीयं एतपनीयं नमस्य त ॥ ३३ ॥ ४० गीष्म मरुतकुंभी
 महालक्ष्मी ४ सुवनाजसमाफ ॥ ॥ नूनमंष्टी महालक्ष्मी देवी ॥ ४१ ॥ अथ
 नैतनं च निषेधं व्याख्यास्याम ॥ ४२ ॥ नैतनं च नृपी नोदीयुष्म मयि महा
 लक्ष्मी हि नक्षत्राय ॥ ४३ ॥ महामानीं हृदि स्थिति महावल्लभान विज्ञान नृपकिलानि

धी ॥ १ ॥ श्रीबीजाक्रम मयी श्रीकान्तमालिनी ॥ नकापीनमिष्ठितौ मुद्यु माली कपालि
 नी ॥ विन्दुवायधनासिंह स्वसिद्धिदा माकदा लगदा धनदी कपालि धि ॥ यक्षध्वनी यक्ष
 ध्वनी ॥ वक्षविद्यावक्ष माती यनवक्ष वता विधी ॥ नूनमयं सत्यं सत्यं धी मंयं य ४ ४
 एततिज्ञायतवय ४ प्रदाययतयन गृह्यते ॥ साहे साहे सोहे श्रीध्यानी नमानम ४ ॥
 महालक्ष्मी सायु अलहता ॥ ४४ ॥ ओधनस्का लिंग स्का नाति मद्युलमध्वगी ॥ हृदय
 वासिनी कटुगी तालमूलस्का ललाटगी सहस्रान निवासां गुणपिगला सुषुम्ना
 विजाय्यानाजी नृपी ॥ तत एविष्य वरुमाने गा गतिस्वफ सुषु कियवस्का ला ॥ तभा
 ह मदाहं कानचैगन्य बुद्धि ॥ ४५ ॥ पातमं धा क्रसाया क्रवा पिनी नृप नृपा हे महाका
 लम्ब देवदेव नाक सना गय करी धर्वत तपत पिभ चण किनी प्रमिपालका
 हे ॥ पून ४ ॥ श्रीध्यानी स्वाहा ॥ अथ वै वंद स सर्वज्ञ एव तिमम सायु अमाश्रमि ॥



